**यशपाल**

हिंदी उपन्यास साहित्य में चार सितारे हैं - प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा, यशपाल और जैनेन्द्र कुमार | प्रेमचन्द ने अपने बहुचर्चित उपन्यास 'गोदान' तथा 'कफन' जैसी कहानियों में आदर्शवाद से मुक्त होकर जिस यथार्थवादी दृष्टिकोण की ओर रूख किया था, हिंदी कथा साहित्य में उसे आगे बढ़ाने का श्रेय यशपाल को जाता है | 3 दिसंबर, 1903 को फिरोजपुर छावनी में जन्में यशपाल के पूर्वज कांगड़ा से थे | गुरूकुल कांगड़ी में यशपाल की आरंभिक शिक्षा हुई |

उनका आरंभिक जीवन सक्रिय क्रांतिकारी गतिविधियों में बीता | वर्ष 1930 में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी की सजा हुई | वर्ष 1931 में चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद में शहीद हो गये, यशपाल ने क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना की कमान संभाली | वे भूमिगत भी हुए, 23 जनवरी, 1932 में इलाहाबाद में उन्हें गिरफ्तार किया गया और मुकदमा चलाया गया | उन्हें 14 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई |

यशपाल के विपुल रचना संसार की मुख्यत: दो कथा-भूमि हैं | एक है स्वाधीनता आंदोलन और दूसरी अतीत का संसार का कथा-लोक | पहली कथा भूमि के अंतर्गत दादा कामरेड, देशद्रोही, पार्टी कामरेड, झूठा सच तथा तेरी मेरी उसकी बात तथा दूसरी कथा भूमि में है | दिव्या, अमीता और अप्सरा का शाप जैसे उपन्यास | इसी प्रकार हम उनकी अनेक कहानियों को भी देख सकते हैं | लेकिन दोनों कथा भूमियों में नारी प्राय: केन्द्र में है | वे शब्दों का मितव्ययिता से प्रयोग करते थे | उनका कहना था, 'शब्दों की फिजूलखर्ची मुझे पसंद नहीं |'

**उपन्यास -** झूठा-सच, तेरी मेरी उसकी बात, दिव्या, अनीता, देशदोही, बारह घण्टे, अप्सरा का शाप, क्यों फंसे, दादा कॉमरेड, पार्टी कॉमरेड

**कहानी संग्रह -** पिंजड़े की उड़ान, वो दुनिया, ज्ञानदान, अभिशप्त, तर्क का उत्तराधिकारी (1951), चित्र का शीर्षक (1952), तुमने क्यों

तूफान, भस्मावृत चिनगारी, धर्म युद्ध (1950), कहा था मैं सुंदर हूं (1954), ओ भैरवी (1958), सच बोलने की भूल (1962), खच्चर और आदमी (1965), लैंप शेड |

**निबंध** - न्याय का संघर्ष, मार्क्सवादी, गांधीवाद की शव परीक्षा, चक्कर क्लब, बात बात में बात, देखा, सोचा, समझा (1951), रामराज्य की कथा (1951), |

**पुरस्कार**

'मेरी तेरी उसकी बात' पर यशपाल को वर्ष 1976 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया | 1955 में वह देव पुरस्कार, 1969 में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 1971 में मंगला प्रसाद पारितोषिक के साथ-साथ भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि भी प्रदान की थी |

यशपाल का 26 दिसंबर, 1976 में देहांत हुआ | इस अवसर पर भीष्म साहनी ने कहा था, 'यशपाल सरीखा व्यक्ति कभी विदा नहीं लेता | मरता वह है जो जीता नहीं है किन्तु यशपाल तो मूर्त जीवन थे | उन्होंने जीवन को उतार-चढ़ाव के साथ जिया |'